Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 9, October-2018, ISSN 2230-7540

संत रैदास की सामजिक चेतना

Seema Devi*

Teacher, Madhav University

सार – ***कुलभूषण कवि रविदास उन महान सन्तों में अग्रणी थे जिन्होने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान किया । इनकी रचनाओं की विशेषता लोक-वाणी का अद्भूत प्रयोग रही है। जिससे जनमानस पर इनका अमिट प्रभाव पड़ता है। मधुर एंव सहज संत रैदास की वाणी ज्ञानाश्रयी होते हुए भी ज्ञानाश्रयी एंव प्रेमाश्रयी शाखाओं के मध्य सेतू की तरफ है। प्राचीन काल से ही भारत में विभिन्न धर्मो तथा मतों के अनुयायी निवास करते रहे है। संत रैदास के समय में देश में मुस्लिम शासन था। हिन्दू पराजित जाति थी। दोनो धर्मो के कुलीन वर्ग एक दूसरे से नफरत करते थे। जहां मुल्ला अपने धर्म को श्रैष्ठ बताकर सभी को इस्लाम धर्म मनाने को मजबूर कर रहे थे। वहीं पंडित पुराहित अपने को श्रेष्ठ सिद्व कर रहे थे। इस खींचतान से समाज निरन्तर पतन की ओर बढ रहा था।***

----------X----------

प्रस्तावना

संत रविदास द्वारा रचित "रविदास के पद" नारद भक्ति सूत्र रविदास की बानी आदि संग्रह भक्तिकाल की अनमोल कृतियों में गिनी जाती है । स्वामी रामानंद के ग्रंथ के आधार पर संत रविदास का जीवनकाल संवत 1417 से 1597 है। उन्होने यह 126 वर्ष का दीर्घकालिन जीवन अपनी अटूट योग और साधना के बल पर जीय।

संत रविदास जी की जो बात मुझे सबसे अच्छी लगी वह यह कि उन्होने अपनी आजीविका कमाते-2 ही अपना दर्शन किया। संत का जीवन व्यतीत किया और उन्होने भिक्षा का सहारा नही लिया। संत रविदास ने मथुरा, प्रयाग, वृन्दावन व हरिद्वार आदि धार्मिक एंव पवित्र स्थानों की यात्राएं की। उन्होने लोगों से सच्ची भक्ति करने का संदेश दिया।

संत रैदास ने ऐसे समाज की परिकल्पना की थी। जिसमें कोई उंच नीच, भेद भाव, राग द्वेष न हो, सभी बराबर हो, सामाजिक कुरीतियां ना हों। भारतीय समाज निर्माता बाबा भीम राव अम्बेडकर पर उनकी विचार धारा का गहरा प्रभाव था। अपने जीवन में संघर्ष करने की प्रेरणा उन्होने संत रैदास से ही पाई थी तथा उनके आदर्श सामाजिक समता तथा प्रजातांत्रिक समाजवाद की कल्पना को भारतीय संविधान में स्वीकार करने की कोशिश भी की। रैदास ऐसे आदर्श समाज की परिकल्पना करते हैं। जिसमें धर्म के नाम ब्राहांडबर व धार्मिक कुरीतियां ना हो, जहां जाति पाति का भेदभाव ना हो। सभी बराबर हो, उंच नीच की प्रथाम समाप्त हो जाए।

संत रविदास ने मनुष्य की मूर्खता पर व्यंग्य कसते हुए कहा कि वह नर और तुच्छ हीरे को पाने की आशा करता है। लेकिन जो हरि हरि का सौदा है। उसे प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करता है।

संत रैदास के समय में देश में मुस्लिम शासन था। हिन्दू पराजित जाति थी। दोनो धर्मो के कुलीन वर्ग एक दूसरे से नफरत करते थे। जातिवादी व्यवस्था के पोषकों के कुटिल कूचक्र को पहचान कर, उन्होने मानव एकता की स्थापना पर बल दिया। उनका मानना था कि जातिवादी व्यवस्था को दूर किय बगैर देश व समाज की उन्नति असंभव है। ये यह बात अच्छे से जानते थे कि जब तक हिन्दू और मुसलमान एक नहीं होंग तब तक समाज में शांति एंव स्थिरता नहीं आऐगी।

संत रैदास के समय में समाज में आर्थिक विषमता काफी बढ़ी हुई थी। इस समस्या के निवारण के लिये उन्होने जिस तरह श्रम को महत्व देकर आत्मनिर्भरता की बात कही।

कूलभूषण रविदास ने सामाजिक धार्मिक एंव राष्ट्रीय एकता के लिये भी समाज में जागृति पैदा की । उन्होने कहा कि तीर्थो की यात्रा किये बिना भी हम अपने हद्वय

www.ignited.in

में सच्चे ईश्वर को उतार सकते है । उनके जीवन की छोटी-2 घटनाओं से समय तथा वचन के पालन सम्बंधी गुणों का पता चलता है। एक बार पर्व के अवसर पर पडोस के लोग गंगा स्नान के लिये जा रहे थे। रैदास के शिष्यों में से एक ने उनसे भी चलने का आग्रह किया तो वे बोले गंगा स्नान के लिये मैं अवश्य चलत, किंतु एक व्यक्ति को जूते बनाकर आज ही देने का मैने वचन दे रखा है, यदि मैं उसे आज जूते नहीं दे सका तो वचन भंग होगा। गंगा स्नान के लिये जाने पर मन यहां लगा रहेगा तो पुण्य कैसे प्राप्त होगा ? मन जो काम करने के लिये अन्तः करण से तैयार हो वही काम करना उचित है। मन सही है तो इसे कठौते के जल में ही गंगा स्नान का पुण्य प्राप्त हो सकता है। कहा जाता है कि इस प्रकार के व्यवहार के बाद से ही कहावत प्रचलित हो गयी कि मन चंगा तो कठौती में गंगा।

रैदास ने उंच नीच की भावना तथा ईश्वर के नाम पर किये जाने वाले विवाद को सारहीन और निरर्थक बताया और सबको परस्पर मिलजुल कर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया।

वे स्वयं मधुर तथा भक्तिपूर्ण भजनों की रचना करते थे और उन्हे भाव-विभोर होकर सुनाते थे। उनका विश्वास था कि राम-कृष्ण, करीम, राघव आदि सब एक ही परमेश्वर के विविध नाम है। वेद, कुरान, पुराण आदि ग्रंथो में एक ही परमेश्वर का गुणगान किया गया है।

कृष्ण, करीम, राम, हरि, राघव जब लग एक न पेखा । वेद, कतेब कुरान, पुरानन सहज एक नही देखा। उनका विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिये सदाचार, परहित-भावना तथा सद्व्यवहार का पालन करना और विनम्रता तथा शिष्टता के गुणों का विकास करने पर उन्होने बहुत बल दिया। संत रविदास अपने काम के प्रति हमेशा समर्पित रहते थे। वे बाहरी आडम्बरों विश्वास नहीं करते थे। धीर-2 संत रविदास की भक्ति की चर्चा दूर-2 तक फैल गई और उनके भक्ति के भजन व ज्ञान की महिमा सुनने में लोग जुटने लगे और उन्हें अपना आदर्श एंव गुरू मानने लगे।

संत रविदास समाज में फैली जाति-पाति, छुआछात, धर्म संप्रदाय वर्ण विशेष जैसी भंयकर बुराईयों को जड़ से समाप्त करने के लिये संत रविदास ने अनेक मधुर और भक्तिमय रसीली कालजयी रचनाओं का निर्माण किया और समाज के उद्धार के लिये समर्पित कर दिया। संत रविदास ने अपनी वाणी एंव सदुपदेशो के जरिये समाज में एक नई चेतना का संचार किया। उन्होने लोगों का पाखण्ड एंव अंधविश्वास छोड़कर सच्चाई के पथ पर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया।

संत रैदास ने लोगो को समझाया कि तीर्थो की यात्रा किये बिना भी हम अपने हद्वय में सच्चे ईश्वर को उतार सकते है। इस प्रकार कुलभूषण रविदास ने समाज को हर बुराई, कुरीति, पाखण्ड और अंधविश्वास से मुक्ति दिलाने के लिये ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया और असंख्य मधुर भक्तिमयी कालजयी रचनाएं की। उनकी भक्ति तप, साधना व सच्चे ज्ञान ने समाज को नई दिशा दी। उनका विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिये सदाचार, परहित भावना तथा सद्व्यवहार का पालन अत्यावश्यक है। अभिमान त्याग कर दूसरों के साथ व्यवहार करने और विनम्रता तथा शिष्टता के गुणों का विकास करने पर उन्होने बहुत बल दिया। उनके विचारों का आशय यही है, कि ईश्वर की भक्ति बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। अभिमान शून्य रहकर काम करने वाला व्यक्ति जीवन में सफल रहता है। जैसे कि विशालकाल हाथी शक्कर के कणों के चुनने में असमर्थ रहता है। जबकि लघु शरीर के कणों के शरीर की पिपीलिका (चीटी) इन को सरलतापूर्वक चुन लेती है। इसी प्रकार अभिमान तथा बड़प्पन का भाव त्याग कर विनम्रतापूर्वक आचरण करने वाला मनुष्य ही ईश्वर का भक्त हो जाता है।

रैदास की वाणी की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम के ओत-प्रोत होती थी। इसलिये उसका श्रौताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगो को ऐसी शिक्षा मिलती थी जिससे उनकी शंकाओ का सन्तोषजनक समाधान हो जाता था और स्वतः उनके अनुयायी बन जाते थे। उनकी वाणी का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि समाज के सभी वर्गो के लोग उनके प्रति श्रदालु बन गये कहा जाता है कि मीराबाई उनकी भक्ति भावना से प्रभावित हुई और उनकी शिष्य बन गई थी। वणश्रिम, अभिमान तजि, पद, रज, बरहिजासु की संदेह-ग्रंथी खण्डन-निपन, बानि बिमुल रैदास की प्रमुख रचनाएं है।

संत रैदास के इसी श्रम के दर्शन को समझ कर महात्मा गांधी ने अपने "रामराज्य" के लिये पांरपरिक हथकरधा तथा कुटीर उद्योगों को महत्व दिया था। संत रैदास साम्यवादी, समाजवादी व्यवस्था के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि पराधिनता से देश समाज और व्यक्ति की सोच संकुचित हो जाती है और संकुचित

विचारधारा वाला व्यक्ति बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय की अवधारणा को व्यावहारिक रूप प्रदान नही कर सकता। उनके मन में समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति गहरा आक्रोश था।

आज भी संत रैदास के उपदेश समाज के कल्याण तथा उत्थान के लिये अत्याधिक महत्वपूर्ण है। उन्होने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पर महान नही होता है। विचारो की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद्व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान बनाने में सहायक होते है। इन्ही गुणो के कारण संत रैदास अपने समय के समाज में अत्याधिक सम्मान लिया और इसी कारण आज भी लोग उन्हे श्रृद्वापूर्वक स्मरण करते है।

रैदास जी को संत कहकर उनके आदर्श को मोड़ने की चेष्टा की गई है। रविदास को संत कहकर उनके क्रांतिकारी विचारो का अंत किया गया है।

संत रैदास अपने समय से बहुत आगे थे क्रांतिकारी वैचारिक अपधारणा, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना तथा युगबोध की सार्थक अभिव्यक्ति के कारण उनका विचार दर्शन लगभग 600 वर्ष बाद आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ

1. अभिमन्यु अनत और उनके उपन्यास एक सांस्कृतिक अध्ययनऋ डॉ. एम.के. प्रीता, सार्थक प्रकाशन गौतमनगर, नई दिल्ली, 2002
2. अभिमन्यु अनतः एक बातचीतऋ डॉ. कमल किशोर गोयनका, ज्ञानभारती, दिल्ली 1985
3. अभिमन्यु अनत व्यक्तित्व एवं कृतित्वऋश्यामधृ तिवारी, अभिनवप्रकाशन, आगरा 1985
4. अज्ञेय सं. विद्या निवास मिश्र, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2008
5. आधुनिक हिंदी उपन्यास सं. नरेन्द्र मोहन, मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली, 1975
6. आत्म निर्वासन और कथा-विरलता मुकेश कुमार, राहुल पब्लिशर्स, दिल्ली, 2010
7. इंग्लैंड का इतिहास शिव कुमार, एस.चांद एंड कम्पनी, नई दिल्ली, 1984
8. इंग्लैंड का इतिहास पार्थ सारथि गुप्ता, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2006
9. उपन्यास स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

Corresponding Author

Seema Devi*

Teacher, Madhav University